जैली हल्क़ों के 12 मदनी कामों में से दसवां मदनी काम

MADANI DOURA (HINDI)

मदनी दौरा

नेकी की दा'वत मस्जिद में

घर घर

गली व बाज़ार

दुकान दुकान

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! *हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**मदनी दौरा**" उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ॖ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मदनी दौरा [1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुवे और सजदे में तशरीफ़ ले गए। सजदे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रूह़े मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो ! चुनान्चे, मैं क़रीब हो कर ग़ौर से देखने लगा। जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ? मैं ने अपना ख़द्शा ज़ाहिर किया तो इरशाद फ़रमाया : जिब्रीले अमीन ने मुझ से कहा : क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात ख़ुश नहीं करती कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती उतारूंगा।[2]

नबी का नाम है हर जा ख़ुदा के नाम के बा'द कहीं दुरूद के पहले कहीं सलाम के बा'द
नबी हैं सारे नबी पर शहे अनाम के बा'द कि दाना दाना है तस्बीह़ का इमाम के बा'द[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1].....दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हफ़्तावार मदनी काम **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** की इस्तिलाह़ को अब **मदनी दौरा** कहा जाता है।

[2].....مسند احمد، مسند العشرة المبشرين...الخ، ۹-مسند عبد الرحمٰن بن عوف، ۱/۵۲۲، حدیث: ۱۶۸۴

[3].....फ़र्श पर अ़र्श अज़ मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द, स. 62

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इब्तिदाए इस्लाम में रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीन साल तक ख़ुफ़्या तौ़र पर दा'वते इस्लाम देते रहे फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़लल ए'लान तब्लीग़ का हुक्म इरशाद फ़रमाया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ क़बाइले अ़रब का दौरा भी फ़रमाया। जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 875 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **सीरते मुस्त़फ़ा** सफ़ह़ा 148 पर है : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा था कि ह़ज के ज़माने में जब कि दूर दूर के अ़रबी क़बाइल मक्का में जम्अ़ होते थे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम क़बाइल में दौरा फ़रमा कर लोगों को इस्लाम की दा'वत देते थे। इसी त़रह़ अ़रब में जा बजा बहुत से मेले लगते थे, जिन में दूर दराज़ से क़बाइले अ़रब जम्अ़ होते थे, इन मेलों में भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े इस्लाम के लिये तशरीफ़ ले जाते थे।

चुनान्चे, उकाज़, मजन्ना, ज़ुल मजाज़ के बड़े बड़े मेलों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बाइले अ़रब के सामने दा'वते इस्लाम पेश फ़रमाई।[1] मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों का दौरा करते हुवे बसा औक़ात सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नेकी की दा'वत

[1] .....شرح الزرقانی علی المواهب، ذکر عرض المصطفی نفسه علی...الخ، ۲/۷۳ ملتقطًا ومفهومًا

www.dawateislami.net

पेश करने में शरीक होते । जैसा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनू जुहल बिन शैबान के हां जा कर जब उस के सरदार **मफ़रूक़** को नेकी की दा'वत पेश की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे ।[1]

इसी त़रह़ जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ का सफ़र फ़रमाया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे, त़ाइफ़ में बड़े बड़े उमरा और मालदार लोग रहते थे, उन रईसों में "अ़म्र" का ख़ानदान तमाम क़बाइल का सरदार शुमार किया जाता था । येह लोग तीन भाई थे अ़ब्दे यालैल, मसऊ़द और ह़बीब । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन तीनों के पास तशरीफ़ ले गए और दा'वते इस्लाम दी, उन तीनों ने इस्लाम क़बूल करने के बजाए गुस्ताख़ाना जवाब दिया, उन बद नसीबों ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि त़ाइफ़ के शरीरों को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुरा सुलूक करने पर भी उभारा, चुनान्चे, उन शरीरों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इस क़दर पथ्थर बरसाए कि आप का जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से लहू लुहान हो गया, ना'लैने मुबारक ख़ून से भर गईं, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ख़्मों से बेताब हो कर बैठ जाते तो येह ज़ालिम इन्तिहाई बे दर्दी के साथ आप का बाज़ू पकड़ कर उठाते और जब आप चलने लगते तो फिर आप पर पथ्थर फैंकते और साथ साथ गालियां देते, मज़ाक़ उड़ाते, क़ह्क़हे लगाते, इस दौरान जब भी वोह लोग पथ्थर

1 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 148 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

फैंकते तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़ कर पथ्थरों को अपने बदन पर ले लेते थे जिन से वोह ख़ुद भी ज़ख़्मी हो गए । इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां से निकल कर अंगूरों के एक बाग़ में पनाह ली ।[1]

ह़क़ की राह में पथ्थर खाए, ख़ूं में नहाए त़ाइफ़ में
दीन का कितनी मेह़नत से काम आप ने ऐ सुल्त़ान किया[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्लीग़े दीन की राह में कैसी कैसी मशक़्क़तें झेलीं, अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें बरदाश्त कीं, आप पर पथ्थर बरसाए गए, ज़ख़्मी कर दिया गया मगर फिर भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को नेकी की दा'वत देते रहे । इस लिये हमें भी चाहिये कि जब कोई इस्लामी भाई किसी को नेकी की दा'वत दे और उसे कोई तक्लीफ़ उठानी पड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तकालीफ़ याद कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने इसे दीन की ख़ात़िर सख़्तियां झेलने वाली सुन्नत अदा करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई । किसी ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नेकी की दा'वत पेश करने को अश्आ़र की शक्ल में कुछ यूं बयान किया है :

पयम्बर दा'वते इस्लाम देने को निकलता था नवीदे राह़तो आराम देने को निकलता था

[1] .....شرح الزرقانی علی المواھب، خروجہ الی الطائف، ۲/۷۳ ملتقطًا

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 197

www.dawateislami.net

निकलते थे कुरैश इस राह में कांटे बिछाने को *वुजूदे पाक पर सौ सौ त़रह़ के ज़ुल्म ढाने को*
ख़ुदा की बात सुन कर मज़्ह़के में टाल देते थे *नबी के जिस्मे अत़्हर पर नजासत डाल देते थे*
तमस्ख़ुर करता था कोई, कोई पथ्थर उठाता था *कोई तौह़ीद पर हंसता था कोई मुंह चिड़ाता था*
मगर वोह मम्बए ह़िल्मो ह़या ख़ामोश रहता था *दुआए ख़ैर करता था जफ़ा व ज़ुल्म सहता था*[1]

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बाज़ार में नेकी की दा'वत

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाज़ार में तशरीफ़ ले गए और बाज़ार के लोगों से कहा कि तुम यहां पर हो और मस्जिद में ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीरास तक़्सीम हो रही है येह सुन कर लोग बाज़ार छोड़ कर मस्जिद की त़रफ़ गए और वापस आ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि हम ने तो मीरास तक़्सीम होते नहीं देखी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : फिर तुम लोगों ने क्या देखा ? उन्हों ने बताया कि हम ने तो कुछ लोगों को देखा है जो नमाज़, तिलावते कलामे पाक और इ़ल्मे दीन की ता'लीम में मसरूफ़ थे। इरशाद फ़रमाया : ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीरास येही तो है।[2]

नेकी की दा'वत देना सह़ाबा का मा'मूल था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाज़ार में मौजूद लोगों को न सिर्फ़ नेकी की

[1].....शाहनामा इस्लाम मुकम्मल, ह़िस्सए अव्वल, स. 117 मुल्तक़त़न

[۲].........معجم اوسط،باب الالف من اسمه احمد،۱/۳۹۰،حديث:۱۴۲۹ مفهومًا وملتقطًا

www.dawateislami.net

दा'वत पेश की बल्कि उन्हें मस्जिद में जारी दर्सो बयान की रग़बत दिलाई कि वोह मस्जिदों की त़रफ़ आएं और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करें। चुनान्चे, वोह लोग कितने ख़ुश नसीब हैं जो बाज़ारों में लोगों को नेकी की दा'वत दे कर मसाजिद में लाते हैं कि वोह एक सह़ाबी की अदा पर अ़मल करते हैं, हमें भी ऐसे मुबल्लिग़ीन में शामिल हो जाना चाहिये।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सुन्नतों की महकती ख़ुश्बूओं और नेकी की दा'वत को दुन्या भर में आ़म करने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त दरबारे इलाही में ख़ाके मदीना का वासित़ा पेश करते हुवे यूं दुआ़ करते हैं :

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चर्चा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम बहरे ख़ाके मदीना (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत सुन कर गाना छोड़ दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बुराई देख कर ख़ामोशी से गुज़र न जाते बल्कि मुमकिन होता तो नेकी की दा'वत ज़रूर देते। जैसा कि मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक रोज़ कूफ़े के क़रीब किसी मक़ाम से गुज़र रहे थे, एक घर के पास ज़ाज़ान नामी मश्हूर गवय्या (या'नी गुलूकार, Singer) निहायत ही सुरीली आवाज़ में गा रहा था और कुछ औबाश लोग शराब के नशे में मस्त गाने बाजे की धुनों पर झूम रहे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : **कितनी प्यारी आवाज़**

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 189

www.dawateislami.net

है ! काश येह क़िराअते क़ुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती ! येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी चादर सर पर डाली और तशरीफ़ ले गए। ज़ाज़ान ने लोगों से पूछा : येह कौन साहिब थे ? लोगों ने बताया : मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। पूछा : उन्हों ने क्या फ़रमाया ? कहा : फ़रमा रहे थे : **कितनी प्यारी आवाज़ है ! काश येह क़िराअते क़ुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती !** येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, वोह उठा और अपना बाजा ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा, बाजे के परख़्चे उड़ गए, फिर रोता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया, आप ने उसे गले से लगा लिया और ख़ुद भी रोने लगे, फिर आप ने फ़रमाया : **जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की मैं उस से क्यूं मह़ब्बत न करूं !** चुनान्चे, ज़ाज़ान ने गाने बाजे से तौबा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत इख़्तियार कर ली और क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल कर के उ़लूमे इस्लामिय्या में ऐसा कमाल ह़ासिल किया कि बहुत बड़े इमाम बन गए।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं गाने बाजों और फ़िल्मों ड्रामों के गुनह छोड़ूं
पढ़ूं ना 'तें करूं अक्सर तिलावत या रसूलल्लाह[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] .....مرقاۃ المفاتیح، کتاب فضائل القرآن، باب آداب التلاوۃ...الخ، ۵/۸۰، تحت الحدیث: ۲۱۹۹

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 133

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मुस्अ़ब इब्ने उ़मैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जलीलुल क़द्र सह़ाबी हैं, इस्लाम से पहले बड़े नाज़ो निअ़म में परवरिश पाते रहे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़क़बए ऊला की बैअ़त के बा'द इन्हें मदीनए मुनव्वरा तब्लीग़ के लिये भेज दिया था, आप लोगों के घरों में जा कर तब्लीग़ करते, हर दौरे में एक दो मुसलमान कर लेते थे ह़त्ता कि वहां एक जमाअ़त मोमिन हो गई ।(1)

बुज़ुर्गाने दीन और नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रह़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن भी **नेकी की दा'वत** देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते, अगर राह चलते बल्कि दौराने सफ़र भी मौक़अ़ मिलता तो नेकी की दा'वत इरशाद फ़रमाते । मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ फ़सवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हमराह मुल्के शाम की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में एक शख़्स लपक कर आप के सामने आया और सलाम करने के बा'द अ़र्ज़ करने लगा : **ऐ अबू यूसुफ़** ! मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये । येह सुन कर आप रो पड़े और (नेकी की दा'वत पेश करते हुवे) फ़रमाया : ऐ भाई ! बेशक शबो रोज़ का (जल्द जल्द) आना जाना,

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, मुतफ़र्रिक़ फ़ज़ाइल की अह़ादीस, पहली फ़स्ल, 8 / 513

www.dawateislami.net

तुम्हारे बदन के घुलने, उम्र के ख़त्म होने और हर दम मौत के क़रीब से क़रीब तर होते चले जाने का पता दे रहा है। इस लिये मेरे भाई ! उस वक़्त तक हरगिज़ मुत़मइन हो कर न बैठना जब तक कि अपने अच्छे ख़ातिमे का मा'लूम न हो जाए और येह पता न चल जाए कि जन्नत में जाना है या कि जहन्नम ठिकाना है ? और येह कि तुम्हारा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे गुनाहों और ग़फ़्लतों की वज्ह से नाराज़ है या अपने फ़ज़्लो रह़मत के सबब तुम से राज़ी है। ऐ कमज़ोर इन्सान ! अपनी औक़ात मत भूलना ! तुम्हारा आग़ाज़ एक नापाक क़त़रा है जब कि अन्जाम सड़ा हुवा मुर्दा। अगर अभी येह नसीह़त समझ नहीं भी आ रही तो अ़न क़रीब समझ में आ जाएगी जिस वक़्त तुम क़ब्र में जाओगे, वहां गुनाहों पर नदामत तो होगी मगर काम न देगी। येह फ़रमा कर आप रोने लगे और वोह शख़्स भी जज़्बाते तअस्सुर से रोने लगा। रावी कहते हैं : उन दोनों को रोता देख कर मैं भी रोने लगा यहां तक कि वोह दोनों बेहोश हो कर गिर गए।[1]

नेकी की दा'वत देने का शरई हुक्म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن तफ़्सीरे नईमी में पारह 4 की आयत नम्बर 104 के तह़त फ़रमाते हैं : ऐ मुसलमानो ! तुम सब को ऐसा गुरौह होना चाहिये या ऐसी तन्ज़ीम बनो या ऐसी तन्ज़ीम बन कर रहो जो तमाम टेढ़े (या'नी बिगड़े हुवे) लोगों को ख़ैर (या'नी नेकी) की दा'वत दे, काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिक़ों को तक़्वे की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की,

[1] .....ذم الهوی، الباب الخمسون فیه وصایا ومواعظ وزواجر، ص۴۹۹ ملخصًا

www.dawateislami.net

जाहिलों को इल्मो मा'रिफ़त की, ख़ुश्क मिज़ाजों को लज़्ज़ते इ़श्क़ की, सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अ़क़ीदों, अच्छे अ़मलों का ज़बानी, क़लमी, अ़मली, क़ुव्वत से, नर्मी से (और ह़ाकिम अपने मह़कूम व मा तह़्त को) गर्मी से हुक्म दे और बुरी बातों, बुरे अ़क़ीदों, बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को (अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़) ज़बान, दिल, अ़मल, क़लम, तल्वार से रोके। मज़ीद फ़रमाते हैं : सारे मुसलमान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें।[1] क्यूंकि बुख़ारी शरीफ़ में है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो।[2]

करम से नेकी की दा'वत का ख़ूब जज़्बा दे
दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देने का फ़ाएदा

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।*

1 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 4, आले इमरान, तह़्तुल आयत : 104, 4 / 79 बित्तग़य्युर

2 .....بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ص۸۸۸، حدیث: ۳۴۶۱

3 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 77

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम में तब्लीग़ बड़ी अहम इबादत है कि तमाम इबादतों का फ़ाएदा अपनी ज़ात को होता है मगर तब्लीग़ का फ़ाएदा दूसरों को भी होता है और जिस अ़मल से दूसरों को भी फ़ाएदा हो वोह उस अ़मल से अफ़्ज़ल होता है जिस से सिर्फ़ अपनी ज़ात को ही फ़ाएदा पहुंचे ।[1]

जो भी "नेकी की दा'वत" पे बांधे कमर उस पे चश्मे करम या शहे बहरो बर ![2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी ख़ुश नसीबी है कि इस पुर फ़ितन दौर में हम तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के प्यारे प्यारे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हैं कि जिस ने हमें येह मदनी मक़्सद अ़ता फ़रमाया : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चुनान्चे, इस मदनी मक़्सद की तक्मील के लिये मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से आ़शिक़ाने रसूल को बारह (12) मदनी कामों में से एक मदनी काम या'नी **मदनी दौरा** भी दिया गया है ।

"मदनी दौरा" से मुराद

मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ रोज़ाना या हफ़्ते में दो दिन या हफ़्ते में एक दिन हर मस्जिद के अत़राफ़ में घर घर, दुकान दुकान जा कर घरों और दुकानों में मौजूद, जब कि राह में खड़े हुवे और आने जाने वाले तमाम अफ़राद को नेकी की दा'वत पेश की जाती है, इसे मदनी दौरा कहा जाता है ।

1 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 4, आले इमरान, तह़्तुल आयत : 104, 4 / 80 बित्तसर्रुफ़

2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 657

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत अगर्चे दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्ति'माल होने वाली एक ख़ास इस्तिलाह है मगर इस से मुराद اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ करना) है, जिस के मुतअल्लिक़ मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف हर शख़्स पर उस के मन्सब (Status) के हवाले से और हस्बे इस्तिताअत वाजिब है, इस पर कुरआनो सुन्नत नातिक़ है और इजमाए उम्मत भी है। اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف हुक्मरानों, उलमाओ मशाइख़ बल्कि हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है, इसे सिर्फ़ एक तबके तक महदूद कर देना सहीह नहीं और हक़ीक़त येह है कि अगर हर शख़्स इस को अपनी ज़िम्मेदारी समझे तो मुआशरा नेकियों का गहवारा बन सकता है।[1] बुराई को बदलने के लिये हर तबके को उस की ताक़त के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी सोंपी गई, क्यूंकि इस्लाम में किसी भी इन्सान को उस की ताक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती । अरबाबे इक़्तिदार, असातिज़ा (Teachers), वालिदैन (Parents) वग़ैरा जो अपने मा तहतों को कन्ट्रोल (Control) कर सकते हैं वोह क़ानून (Law) पर सख़्ती से अमल करा के और मुख़ालफ़त की सूरत में (शरीअत के दाइरे में रहते हुवे) सज़ा दे कर बुराई का ख़ातिमा कर सकते हैं । मुबल्लिग़ीने इस्लाम, उलमा व मशाइख़, अदीबो सहाफ़ी (Writer & Journalist) और दीगर ज़राइए इब्लाग़ (Means Of Communication) मसलन रेडियो (Radio) और टीवी (T.V) वग़ैरा से सभी लोग अपनी तक़रीरों तहरीरों बल्कि शोअरा (Poest) अपनी

1 .....मिरआतुल मनाजीह, नेक बातों का हुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6 / 502

www.dawateislami.net

नज़्मों (Poems) के ज़रीए बुराई का क़ल्अ़ क़म्अ़ करें और नेकी को फ़रोग़ दें, بِلِسَانِہٖ (या'नी ज़बान से नेकी की दा'वत पेश करने) के तह़्त येह तमाम सूरतें आती हैं और आ़म मुसलमान जिसे इक़्तिदार की कोई सूरत भी ह़ासिल नहीं और न ही वोह तह़्रीर व तक़रीर के ज़रीए बुराई का ख़ातिमा कर सकता है वोह दिल से उस बुराई को बुरा समझे अगर्चे येह ईमान का कमज़ोर तरीन मर्तबा है क्यूंकि कोशिश कर के ज़बान से रोकना चाहिये लेकिन दिल से जब बुरा समझेगा तो यक़ीनन ख़ुद बुराई के क़रीब नहीं जाएगा और इस त़रह़ मुआ़शरे (Society) के बेशुमार अफ़राद ख़ुद ब ख़ुद राहे रास्त पर आ जाएंगे।[1]

"फ़ैज़ाने मदनी दौरा" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से मदनी दौरे के ﴿13﴾ फ़ज़ाइल व फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मदनी दौरा** ऐसा प्यारा मदनी काम है, जिस में दूसरे मुसलमानों के पास जा कर नेकी की दा'वत पेश की जाती है और दूसरों के पास जा कर नेकी की दा'वत देना न सिर्फ़ हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है बल्कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सलफ़ सालिह़ीन और बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن का भी त़रीक़ा है। आइये ! इस के फ़ज़ाइलो फ़वाइद जानते हैं :

﴿1﴾ नेकी की दा'वत देने की फ़ज़ीलत पाने का ज़रीआ़

मदनी दौरा दूसरे मुसलमानों को नेकी की दा'वत देने की फ़ज़ीलत पाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है, चुनान्चे, दूसरों को नेकी की दा'वत

[1].....मिरआतुल मनाजीह़, नेक बातों का हुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6 / 503

www.dawateislami.net

देने की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में से हैं न शुहदा में से, लेकिन बरोज़े क़ियामत अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदा उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे,[1] वोह लोग नूर के मिम्बरों पर बुलन्द होंगे, येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को **अल्लाह** तआ़ला का मह़बूब (या'नी प्यारा) बन्दा बना देते हैं और वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीह़तें करते चलते हैं। अ़र्ज़ की गई : वोह किस त़रह़ लोगों को **अल्लाह** तआ़ला का मह़बूब बना देते हैं ? फ़रमाया : वोह लोगों को **अल्लाह** तआ़ला की पसन्दीदा बातों का हुक्म देते और नापसन्दीदा बातों से मन्अ़ करते हैं, पस जब लोग उन की इत़ाअ़त करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपना मह़बूब बना लेगा।[2]

[1].....मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अम्बिया व शुहदा के इस रश्क करने की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : या तो यहां ग़िब्त़ा से मुराद है ख़ुश होना, तब तो ह़दीस वाज़ेह़ है कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम उन लोगों को उस मक़ाम पर देख कर बहुत ख़ुश होंगे और उन लोगों की ता'रीफ़ करेंगे। और अगर ग़िब्त़ा ब मा'ना रश्क ही हो तो मत़लब येह है कि अगर ह़ज़राते अम्बिया व शुहदा किसी पर रश्क करते तो उन पर करते, तो येह फ़र्ज़ी सूरत का ज़िक्र है। या येह रश्क अपनी उम्मत की बिना पर होगा कि उम्मते मुह़म्मदिया में येह लोग ऐसे दर्जे में हैं कि हमारी उम्मत में नहीं या येह मक़्सद है कि वोह ह़ज़रात अपनी उम्मत का ह़िसाब करा रहे होंगे और येह लोग आराम से उन मिम्बरों पर बे फ़िक्री से आराम कर रहे होंगे तो ह़ज़राते अम्बियाए किराम उन लोगों की बे फ़िक्री पर रश्क करेंगे कि हम मश्ग़ूल हैं येह फ़ारिग़ुल बाल (बे फ़िक्र)। बहर ह़ाल इस ह़दीस से येह लाज़िम नहीं कि येह ह़ज़रात अम्बियाए किराम से अफ़्ज़ल होंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, **अल्लाह** के लिये मह़ब्बत का बयान, दूसरी फ़स्ल, 6 / 592)

[٢].........شعب الایمان، باب فی محبة اللّٰہ، معانی المحبة، ۱/ ۳۶۷، حدیث: ۴۰۹ ملتقطًا

www.dawateislami.net

अह़मद रज़ा का सदक़ा मुसलमान नेक हों *नेकी की दा'वत आक़ा जहां भर में आ़म हो* [1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुबल्लिग़ मह़बूब ही नहीं, मह़बूब गर भी होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वालों की भी कैसी शानें हैं, बरोज़े क़ियामत उन पर रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़मो इकराम देख कर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी रश्क करेंगे । इस अ़ज़्मतो शान का सबब क्या होगा ? येही कि वोह नेकी की दा'वत दे कर और बुराई से मन्अ़ कर के लोगों को बा अ़मल बना कर "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब" बनाते होंगे । जब वोह दूसरों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बनाते होंगे तो ख़ुद क्यूं न मह़बूब होंगे !

***अल्लाह* का मह़बूब बने जो तुम्हें चाहे**
उस का तो बयां ही नहीं कुछ तुम जिसे चाहो [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ फ़रोग़े इ़ल्म का सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मदनी दौरा** फ़रोग़े इ़ल्म का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ है, वोह यूं कि जो लोग नेकी की दा'वत सुन कर मुतअस्सिर होते हैं और हाथों हाथ ख़ैरख़्वाह इस्लामी भाई के साथ मस्जिद में आ जाते हैं तो उन्हें मस्जिद में जारी मदनी ह़ल्के़ में सुन्नतें और आदाब

[1].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 310
[2].....ज़ौक़े ना'त, स. 147

www.dawateislami.net

वग़ैरा सीखने का ही मौक़अ़ नहीं मिलता, बल्कि नमाज़े मग़रिब के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे बयान में शिर्कत से भी इ़ल्मे दीन के मदनी फूल चुनने की सआ़दत मिलती है।

﴾3﴿ मसाजिद की रौनक़ का सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी चूंकि मस्जिद भरो तह़रीक है, इस लिये जब हम अपने अपने अ़लाक़ों में **मदनी दौरे** का सिलसिला शुरूअ़ करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से न सिर्फ़ हमारी मस्जिदों में नमाज़ियों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होगा बल्कि मसाजिद आबाद भी होंगी और इन की रौनकें भी लौट आएंगी।

याद रखिये ! मस्जिद की रौनक़ रंगो रौग़न, क़ालीन, मुनक़्क़श टाइल (Tile) व दरी या लाइटों (Lights) से नहीं बल्कि **मस्जिद की रौनक़ तो नमाज़ियों** से होती है।

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ नफ़्ल ए'तिकाफ़ की सआ़दत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी दौरे में शिर्कत के बाइ़स नफ़्ल ए'तिकाफ़ की सआ़दत भी मिलती है, चूंकि मदनी माह़ोल में होने वाले दर्सो बयान के त़रीक़े में येह मदनी फूल शामिल है कि मस्जिद में दर्सो बयान के आग़ाज़ में नफ़्ल ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाई जाए ताकि

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

www.dawateislami.net

हाज़िरीन को दीगर फ़ज़ाइलो बरकात के साथ साथ नफ़्ल ए'तिकाफ़ की बरकतें भी हासिल हों।

मदनी दौरे में बा'दे अस्र नेकी की दा'वत के लिये मस्जिद से बाहर जाने की तरग़ीब पर मुख़्तसर बयान और फिर मग़रिब से कुछ देर पहले तक सुन्नतें व आदाब सीखने सिखाने का हल्क़ा, फिर बा'दे मग़रिब सुन्नतों भरा बयान होता है, जिन के आग़ाज़ में नफ़्ल ए'तिकाफ़ की तरग़ीब दिलाई जाती है और ख़ुश नसीब इस्लामी भाई नफ़्ल ए'तिकाफ़ की निय्यत करते भी हैं।

﴾5﴿ इजतिमाअ़ की बरक्तें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते रास्तों में ज़िक्रुल्लाह करने वालों की तलाश में घूमते रहते हैं, फिर जब किसी क़ौम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते पाते हैं, तो एक दूसरे को पुकारते हैं कि अपने मक़्सद की त़रफ़ आओ, चुनान्चे, वोह फ़िरिश्ते उन ज़ाकिरीन (ज़िक्र करने वालों) को अपने परों में आस्माने दुन्या तक ढांप लेते हैं और जब लोग बिखर जाते हैं तो वोह फ़िरिश्ते आस्मान पर पहुंच जाते हैं।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़लीमो ख़बीर होने के बा वुजूद फ़िरिश्तों से पूछता है कि मेरे वोह बन्दे क्या कहते थे ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि तेरी तस्बीह़ व तक्बीर और तेरी ह़म्द व बुज़ुर्गी बयान कर रहे थे। रब तआ़ला फ़रमाता है : क्या उन्हों ने मुझे देखा है ? अ़र्ज़ करते हैं : तेरी क़सम ! उन्हों ने तुझे कभी नहीं देखा। फिर फ़रमाता है : अगर वोह

[1] ..... مسلم، کتاب الذکر...الخ، باب فضل مجالس الذکر، ص ۱۰۳۷، حدیث: ۲۶۸۹

www.dawateislami.net

मुझे देख लें फिर क्या हो ? अ़र्ज़ करते हैं : अगर वोह तुझे देख लें तो तेरी और ज़ियादा इबादत करें, बड़ाई बोलें और कसरत से तस्बीह़ करें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : वोह मांगते क्या थे ? अ़र्ज़ करते हैं : तुझ से जन्नत मांग रहे थे । रब तआ़ला फ़रमाता है : क्या उन्हों ने जन्नत देखी है ? अ़र्ज़ करते हैं : या रब ! तेरी क़सम ! नहीं देखी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अगर वोह जन्नत देख लें तो क्या हो ? अ़र्ज़ करते हैं : अगर वोह जन्नत देख लें तो उस के और ज़ियादा ह़रीस, त़लबगार और मज़ीद रग़बत करने वाले बन जाएं । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : वोह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ? अ़र्ज़ करते हैं : वोह (जहन्नम की) आग से पनाह मांग रहे थे । रब तआ़ला फ़रमाता है : क्या उन्हों ने (जहन्नम की) आग देखी है ? अ़र्ज़ करते हैं : या इलाही ! तेरी क़सम ! नहीं देखी । फिर फ़रमाता है : अगर वोह लोग देख लें तो क्या हो ? अ़र्ज़ करते हैं : अगर वोह लोग देख लें तो उस से और ज़ियादा दूर भागें बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ करें । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया । एक फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : उन में फ़ुलां बन्दा तो ज़िक्र करने वालों में से न था वोह तो किसी काम के लिये आया था । रब तआ़ला फ़रमाता है : ज़िक्र करने वाले ऐसे हम नशीन हैं कि उन के साथ बैठ जाने वाला भी मह़रूम नहीं रहता ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इजतिमाअ़ में शिर्कत से बरकतें कैसे मिलती हैं ! **मदनी दौरे** में भी चूंकि मग़रिब के

[1] ..... بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ، ص۱۵۷۸، حدیث:۶۴۰۸

www.dawateislami.net

बा'द बयान होता है। इस लिये इस में शिर्कत फ़रमाया करें, मुमकिन है इस की बरकत से हमारी भी नजात का सामान हो जाए।

सुन्नतों की लूटना जा के मताअ़ हो जहां भी सुन्नतों का इजतिमाअ़ [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ इजतिमाई दुआ़ की बरक्तें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों के इजतिमाआ़त में दुआ़एं क़बूल होती हैं, जैसा कि फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में है : जमाअ़त में बरकत है और دعائے مجمع مسلمین اقرب بقبول (या'नी मुसलमानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है)।[2] नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र के इजतिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़ पर ब रिवायते सहीह़ फ़िरिश्ते "आमीन" कहते हैं।[3] चुनान्चे, **मदनी दौरे** में शिर्कत की बरकत से बार बार इजतिमाई दुआ़ की सआ़दत मिलती है, मसलन

- बा जमाअ़त नमाज़े अ़स्र के बा'द की इजतिमाई दुआ़।
- नमाज़े अ़स्र के बा'द होने वाले मुख़्तसर बयान के बा'द की इजतिमाई दुआ़।
- **मदनी दौरे** पर जाने से क़ब्ल की इजतिमाई दुआ़।
- **मदनी दौरे** से वापस आने पर इजतिमाई दुआ़।

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 715
2 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 184
3 .....फ़ज़ाइले दुआ़, स. 123 माख़ूज़न ब ह़वाला

کنز العمال، کتاب الاذکار، المجلد الاول، ۱/۲۲۲، حدیث: ۱۸۷۲

www.dawateislami.net

☞ बा जमाअ़त नमाज़े मग़रिब के बा'द की इजतिमाई दुआ़ ।

☞ सुन्नतों भरे बयान के बा'द की इजतिमाई दुआ़ ।

शहा ! इस इजतिमाए़ पाक में जितने मुसलमां हैं
हो सब की मग़फ़िरत हो सब पे रह़मत या रसूलल्लाह (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ इस्लामी भाइयों की मदनी तरबिय्यत

मदनी दौरा उन इस्लामी भाइयों की मदनी तरबिय्यत का भी बेहतरीन ज़रीआ़ है जो अभी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नए हों । चुनान्चे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी दौरे** की बरकत से नए इस्लामी भाइयों को हर ख़ासो आ़म से मिलने का अन्दाज़, छोटे बड़े को सलाम में पहल की कोशिश, नेकी की दा'वत का जज़्बा, नेकी की दा'वत पेश करने का त़रीक़ा, दर्सो बयान सीखने, रास्ते में चलने के आदाब, दुरूद शरीफ़ की कसरत, किसी की त़रफ़ से ना मुनासिब रवय्ये पर सब्र और दीगर बहुत सी बातें सीखने का मौक़अ़ मुयस्सर आता है ।

मेरा सीना तेरी सुन्नत का मदीना बन जाए सुन्नतों का करूं परचार रसूले अ़रबी (2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ सलाम की सुन्नत को आ़म करने का ज़रीआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी दौरे में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सलाम वाली प्यारी प्यारी सुन्नत को आ़म करने का

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 334
2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 375

www.dawateislami.net

भी ख़ूब मौक़अ़ मिलता है, वोह यूं कि **मदनी दौरे** में जब किसी को नेकी की दा'वत पेश करनी हो तो सब से पहले सलाम व मुसाफ़हा वग़ैरा की तरकीब बना कर उस की तवज्जोह हासिल की जाती है, बा'द में नेकी की दा'वत पेश की जाती है । चुनान्चे, इस तरह इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اُعْبُدُوا الرَّحْمٰنَ وَاَفْشُوا السَّلَام या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और सलाम को आ़म करो ।[1] पर अ़मल की फ़ज़ीलत व बरकत भी हासिल होती है । नीज़ चूंकि सलाम करने से महब्बत बढ़ती है, जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं कि जब तुम उस पर अ़मल करो तो तुम्हारे दरमियान महब्बत बढ़े और वोह येह है कि आपस में सलाम को आ़म करो ।[2] लिहाज़ा **मदनी दौरे** में लोगों के पास जा कर जब उन्हें सलाम कर के नेकी की दा'वत पेश करेंगे तो सलाम की बरकत से उन के दिलों में दा'वते इस्लामी वालों की महब्बत भी पैदा होगी ।

ज़माने भर में मचा देंगे धूम सुन्नत की
अगर करम ने तेरे साथ दे दिया या रब ![3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

9 सब का सवाब

मदनी दौरे में नेकी की दा'वत देते हुवे बसा औक़ात लोगों की

[1] .....ابن ماجه، كتاب الادب، باب افشاء السلام، ص ۵۹۵، حديث: ۳۶۹۴

[2] .....مسلم، كتاب الايمان، باب بيان ان لا يدخل الجنة...الخ، ص ۴۴، حديث: ۵۴

[3] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 88

www.dawateislami.net

त़रफ़ से ऐसे जुम्ले भी सुनना पड़ते हैं जो नफ़्स पर बड़े गिरां गुज़रते हैं (मसलन ♣ ह़ज़रत मेरे पास अभी टाइम नहीं है, काम का वक़्त है, बा'द में सुन लेंगे ♣ मौलाना ! हमें पता है नमाज़ पढ़नी होती है, हमें सब कुछ आता है, आप किसी और को समझाएं वग़ैरा), चुनान्चे, मुबल्लिग़ को उस वक़्त हुस्ने अख़्लाक़ से काम लेना चाहिये और याद रखना चाहिये कि राहे ख़ुदा में नेकी की दा'वत पेश करते हुवे इस क़िस्म के कलिमात सुन कर इन पर सब्र से काम लेना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुबल्लिग़ीन को सब्र की तल्क़ीन फ़रमाते हुवे कैसे प्यारे अन्दाज़ से मदनी तरबिय्यत फ़रमा रहे हैं :

टूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर ऐ मुबल्लिग़ न तू डगमगा सब्र कर
लब पे ह़र्फ़े शिकायत न ला सब्र कर हां येही सुन्नते शाहे अबरार है (1)

येही नहीं बल्कि येह भी याद रखना चाहिये :

राहे सुन्नत में हुवा जो भी ज़लील उस को उन के दर से इ़ज़्ज़त मिल गई (2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ दा'वते इस्लामी की तशहीर

मदनी दौरे की बरकत से दा'वते इस्लामी की तशहीर भी होती है, कई आ़शिक़ाने रसूल **मदनी दौरे** की बरकत से दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुतआ़रिफ़ होते हैं।

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 473
2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 400

www.dawateislami.net

﴾11﴿ तकब्बुर का इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मदनी दौरे** में शिर्कत की बरकत से तकब्बुर की काट होगी और आ़जिज़ी पैदा होगी, क्यूंकि इह़याउल उ़लूम में है तकब्बुर की अ़लामात में से एक अ़लामत येह है कि मुतकब्बिर आदमी दूसरों की मुलाक़ात के लिये नहीं जाता अगर्चे उस के जाने से दूसरे को दीनी फ़ाएदा ही क्यूं न हो ।[1] इसी त़रह़ मुतकब्बिर शख़्स चूंकि मरीज़ों और बीमारों के पास बैठने से भागता है[2] लिहाज़ा **मदनी दौरे** में जब ख़ुद चल कर दूसरों के पास जाएंगे तो तकब्बुर की काट होगी और आ़जिज़ी पैदा होगी । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

उ़ज्बो तकब्बुर और बचा हुब्बे जाह से आए न पास तक रिया या रब्बे मुस्त़फ़ा[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी

जब हम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **मदनी दौरे** वाला मदनी काम पाबन्दी से करते रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से न सिर्फ़ हमें अपने मदनी मक़्सद (या'नी मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) के ह़ुसूल में कामयाबी

[1] .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر و العجب، بیان اخلاق المتواضعین...الخ، ۳/۴۳۴

[2] .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر و العجب، بیان اخلاق المتواضعین...الخ، ۳/۴۳۵

[3] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 132

www.dawateislami.net

मिलेगी बल्कि हल्क़े, अ़लाक़े, डिवीज़न, काबीना में मदनी कामों की मदनी बहार आ जाएगी । जैसा कि फ़रमाने अमीरे अह्ले सुन्नत है : दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी के लिये **मदनी दौरा** बहुत मुफ़ीद मदनी काम है, तमाम इस्लामी भाई मिल कर इस मदनी काम को मज़बूत करें ।[1]

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने की मशीन

मदनी दौरे की बदौलत हमें बेशुमार नए नए इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये तय्यार करने का मौक़अ़ मिलेगा, जिस के नतीजे में हमारे अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी का मदनी काम मज़बूत से मज़बूत तर होता चला जाएगा और हमारी मस्जिदों से मदनी क़ाफ़िले रवाना होना शुरूअ़ हो जाएंगे । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : दा'वते इस्लामी की बक़ा मदनी क़ाफ़िलों में है और मदनी क़ाफ़िलों की बक़ा **मदनी दौरे** में है बल्कि आप ने यूं भी इरशाद फ़रमाया : **मदनी दौरा मदनी क़ाफ़िलों को चलाने की मशीन है ।**[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी हम **मदनी दौरा** करें तो मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ ही करें क्यूंकि मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार पर अ़मल की बेशुमार बरकतें हैं । चुनान्चे,

1 .....मदनी मुज़ाकरा ऑफ़ ऐर, 24 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 फ़रवरी 2015 ईसवी
2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315
3 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 320

www.dawateislami.net

हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िला तय्यार

एक मरतबा एक इस्लामी भाई मदनी तरबिय्यत गाह से किसी अ़लाक़े में **मदनी दौरे** के लिये तशरीफ़ ले गए। उस अ़लाक़े के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने कहा कि यहां से मदनी क़ाफ़िले तय्यार होते हैं न **मदनी दौरा** कामयाब होता है। मगर जब इस्लामी भाई ने वहां जा कर मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **मदनी दौरे** का सिलसिला शुरूअ़ किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार की बरकत से अ़स्र से मग़रिब तक काफ़ी इस्लामी भाई हाथों हाथ मस्जिद में तशरीफ़ लाए। नमाज़े मग़रिब के बा'द बयान हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िला तय्यार हो कर राहे ख़ुदा में सफ़र पर रवाना हो गया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सब मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार पर अ़मल करने की बरकत से हुवा, आइये ! **मदनी दौरे** का त़रीक़ए कार और आदाब मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

मदनी दौरे का त़रीक़ा

ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम और काम

मदनी दौरे में एक इस्लामी भाई **निगरान**, एक **राहनुमा**, एक **दाई** और एक या दो **ख़ैरख़्वाह** होंगे।

1 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 320

www.dawateislami.net

♣ **निगरान** का काम येह है कि **मदनी दौरे** से क़ब्ल मस्जिद के दरवाज़े के बाहर खड़े हो कर दुआ़ करवाए और **राहनुमा** मदनी क़ाफ़िले वालों को मस्जिद के क़रीब क़रीब घरों, दुकानों वग़ैरा पर अ़लाक़े के मक़ामी भाइयों के पास ले जाए और सलाम व मुसाफ़हा के बा'द नर्मी से अ़र्ज़ करे कि हम (---------) मस्जिद से हाज़िर हुवे हैं, हम कुछ अ़र्ज़ करना चाहते हैं, आप सवाब की निय्यत से सुन लीजिये।

♣ अगर वोह बैठे हों या काम में मसरूफ़ हों तो खड़े हो कर सुनने की दरख़्वास्त करें, इस त़रह़ उन की तवज्जोह रहेगी।

♣ **राहनुमा** के लोगों को मुतवज्जेह करने के फ़ौरन बा'द **दाई** नर्मी के साथ नेकी की दा'वत पेश करे, इस दौरान **दाई** अपनी बेबसी और दिलों को फैरने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे कि येह कामयाबी की कुंजी है।

♣ **ख़ैरख़्वाह** का काम येह है कि जो इस्लामी भाई कुछ फ़ासिले पर हों उन्हें क़रीब क़रीब करे और **दाई** की दा'वत सुन कर हाथों हाथ मस्जिद में चलने के लिये तय्यार होने वालों को अपने साथ मस्जिद में पहुंचा कर, बयान में बिठा कर वापस **मदनी दौरे** में शामिल हो जाए।[1]

त़रीक़ए कार

मदनी दौरे का ज़िम्मेदार अज़ाने अ़स्र से 26 मिनट क़ब्ल जम्अ़ होने वाले इस्लामी भाइयों में ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे।

1 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 322

www.dawateislami.net

(मदनी क़ाफ़िले में येह ज़िम्मेदारियां सुब्ह मदनी मश्वरे के हल्क़े में ही तक़्सीम कर ली जाएं)

इन ज़िम्मेदारियों में :

- अ़स्र का ए'लान
- अ़स्र के बा'द का बयान (12 मिनट)
- ख़ैरख़्वाह
- अ़स्र ता मग़रिब दर्स
- अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में होने वाले दर्स में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई
- मस्जिद के बाहर जाने वाले इस्लामी भाई
- मग़रिब का ए'लान
- मग़रिब का बयान (25 मिनट, मदनी क़ाफ़िले के जदवल में पहले और दूसरे दिन तक़रीबन 12 मिनट और आख़िरी दिन 26 मिनट) शामिल हैं।

ज़िम्मेदारियां तक़्सीम हो जाने के बा'द त़बई ह़ाजात से फ़ारिग़ हो कर तमाम इस्लामी भाई पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े अ़स्र अदा करें।

अ़स्र का ए'लान और अ़स्र का बयान करने वाले इस्लामी भाई इक़ामत कहने वाले के बराबर में नमाज़ अदा करें। जैसे ही इमाम साहिब सलाम फेरें मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई फ़ौरन इमाम साहिब के क़रीब खड़े हो कर इस त़रह़ ए'लान करे।

नोट : (ए'लाने अ़स्र में अपनी त़रफ़ से कोई कमी बेशी न करें)

ए'लाने अ़स्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

www.dawateislami.net

आप के अ़लाक़े में नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये आप की मदद दरकार है बराहे करम ! दुआ़ के बा'द तशरीफ़ रखिये और ढेरों सवाब कमाइये।

दुआ़ के बा'द मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई 12 मिनट का बयान करे। जिस में नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल बयान किये जाएं। इस के बा'द (ज़ैल में दिये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़) **मदनी दौरे** में शिर्कत की तरग़ीब दिलाएं।[1]

मदनी दौरे की तरग़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर दुकानों, घरों वग़ैरा पर नेकी की दा'वत पेश की जाएगी अगर आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को भी ढेरों नेकियां मिलेंगी। ह़दीसे पाक का मफ़्हूम है : जो क़दम राहे ख़ुदा में ख़ाक आलूद होंगे उन को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।[2] चूंकि नेकी की दा'वत देने वालों का साथ देना भी अ़ज़ीम नेकी है। लिहाज़ा आप भी हमारे साथ इस नेक काम में तआ़वुन फ़रमाएं और **मदनी दौरे** में शिर्कत फ़रमाएं।

फिर इस त़रह़ कहें : **मदनी दौरे** में शिर्कत की सआ़दत पाने वाले इस्लामी भाई मेरी सीधी जानिब तशरीफ़ ले आएं। जब कुछ इस्लामी भाई सीधी जानिब आ जाएं तो बयान करने वाला इस्लामी भाई बक़िय्या इस्लामी भाइयों से इस त़रह़ कहे :

1 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 326 ता 327

2 .....مسند احمد، مسند المکیین، ۲۲۷-حدیث ابی عبس، ۶/۵۰۷، حدیث: ۱۶۳۵۶

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़रीब क़रीब तशरीफ़ ले आइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ यहां मस्जिद में भी बयान जारी रहेगा। मस्जिद में बैठने से ढेरों नेकियां हासिल होती हैं। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ौम किताबुल्लाह की तिलावत के लिये **अल्लाह** तआ़ला के घरों में से किसी घर में जम्अ़ हो और एक दूसरे के साथ दर्स की तकरार करे तो उन पर सकीना (इत्मीनान व सुकून) नाज़िल होता है, रह़मते इलाही उन्हें ढांप लेती है, फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं, और **अल्लाह** तआ़ला उन का ज़िक्र फ़िरिश्तों के सामने फ़रमाता है।[1]

फिर दुआ़ के फ़ौरन बा'द अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में बयान करने के लिये मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई बैठ कर इस्लामी भाइयों को मज़ीद क़रीब कर के बयान शुरूअ़ कर दे। अगर पहले से ज़िम्मेदारियां तक़्सीम न हों तो जिस इस्लामी भाई की **मदनी दौरा** करवाने की ज़िम्मेदारी है वोह सीधी जानिब आने वाले इस्लामी भाइयों में ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे और **मदनी दौरे** के फ़ज़ाइलो आदाब बताए।[2]

फिर **मदनी दौरा** में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाइयों को निगरान, **मदनी दौरे** के आदाब समझाए और मस्जिद के दरवाज़े पर दुआ़ मांग कर निगाहें नीची किये रास्ते के किनारे दो-दो इस्लामी भाई

[1] .....مسلم، کتاب الذکر والدعا...الخ، باب فضل الاجتماع...الخ، ص۱۰۳۹، حدیث: ۲۶۹۹

[2] .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 327

www.dawateislami.net

क़िताार में चलें, **राहनुमा** आगे बढ़ कर सलाम करे और यूं कहे **हम मस्जिद से ह़ाज़िर हुवे हैं कुछ अ़र्ज़ करेंगे आप सुन लीजिये ।** अब **दाई** (मुमकिन हो तो रो रो कर) नेकी की दा'वत पेश करे ।

मदनी दौरे के आदाब

☞ मस्जिद से बाहर दुआ़ के बा'द इस्लामी भाई दो-दो की क़िताार में चलें ।

☞ **दाई** और **राहनुमा** आगे आगे रहें ।

☞ आपस में बात चीत न करें ।

☞ कोशिश कर के रास्ते के एक त़रफ़ चलें ।

☞ ह़त्तल इमकान निगाहें नीची कर के चलें और इधर उधर देखने से इजतिनाब करें ।

☞ मुन्तशिर होने की बजाए सारे इस्लामी भाई इकट्ठे ही रहें ।

☞ हाथों में तस्बीह़ और लबों पर दुरूदो सलाम जारी रखें दुरूदे पाक की बरकत से नेकी की दा'वत में तासीर पैदा हो जाएगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

☞ अगर किसी को उस का शनासा (या'नी जानने वाला) मिल जाए तो वोह इस्लामी भाई उस से सलाम व मुसाफ़ह़ा कर के चल पड़े या उसे भी अपने साथ ले ले ।

☞ जब किसी के मकान पर दस्तक दें तो घर के मर्दों को बुला कर एक त़रफ़ खड़े हो कर नेकी की दा'वत दें ।

☞ जब किसी को नेकी की दा'वत पेश की जाए तो कोई इस्लामी भाई दरमियान में न बोले बल्कि तमाम इस्लामी भाई ख़ामोशी के साथ निगाहें नीची किये सुनें ।

www.dawateislami.net

☞ वापसी पर इस्तिग़फ़ार पढ़ते हुवे आएं।

☞ मग़रिब की अज़ान से 10 मिनट क़ब्ल वापस आ कर मस्जिद में जारी दर्स में शिर्कत करें।[1]

नेकी की दा'वत से पहले की दुआ

आदाब बयान करने के बा'द तमाम इस्लामी भाई मदनी दौरे के लिये रवाना हो जाएं। नेकी की दा'वत के लिये जाते हुवे निगरान इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर दरवाज़े के पास येह दुआ मांगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमारी और उम्मते महबूब की मग़फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम नेकी की दा'वत देने के लिये **मदनी दौरे** पर रवाना हो रहे हैं इस दीन के काम में तू हमारी मदद फ़रमा और हमारा दिल लगा दे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे दिल में इख़्लास पैदा कर और ज़बान में असर दे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अ़लाक़े के मुसलमान भाइयों को भी हमारे साथ चल पड़ने की सआ़दत नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रफ़ सुन्नतों की मदनी बहार आ जाए। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमारी येह टूटी फूटी दुआएं क़बूल फ़रमा।[2]

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

1 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 323

2 .....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 324

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)

हम अल्लाह पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। हमें जल्द ही अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात **अल्लाह** पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में है।

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** का एक मदनी क़ाफ़िला ..... शहर से आप के अ़लाक़े की ..... मस्जिद में आया हुवा है। हम **"नेकी की दा'वत"** देने के लिये ह़ाज़िर हुवे हैं। मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत करने के लिये मेहरबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये ! तशरीफ़ ले चलिये ! (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये। नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से दरख़्वास्त है कि बयान ज़रूर सुनियेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और आप को दोनों जहानों की भलाइयां नसीब फ़रमाए। **आमीन**

दाई (या'नी नेकी की दा'वत देने वाला) इस दौरान अपनी बेबसी और दिलों के फेरने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तवज्जोह रखे, तमाम इस्लामी भाई ख़ामोशी से सुनें। हाथों हाथ मस्जिद में आने के लिये तय्यार होने वाले इस्लामी भाई को ख़ैरख़्वाह (महब्बत भरे अन्दाज़ में गुफ़्तगू करते हुवे) मस्जिद तक छोड़ने के लिये आएं।

अगर कोई भी तय्यार न हो तो लोगों पर बद गुमानी करने की बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करते हुवे इस्तिग़फ़ार करें और अपनी कोशिश तेज़ कर दें। अगर कोई ना खुशगवार वाक़िआ़ पेश आ गया मसलन किसी ने झाड़ दिया वग़ैरा तो सिर्फ़ सब्र और सब्र करें। दौराने **मदनी दौरा** न कहीं बैठें न चाए वग़ैरा की दा'वत क़बूल करें। अज़ाने मग़रिब से कुछ देर क़ब्ल ही मस्जिद में पहुंच जाएं और अ़स्र ता मग़रिब होने वाले दर्स में शामिल हों, वापसी पर मस्जिद के दरवाज़े पर निगरान फिर दुआ़ करवाए।

नेकी की दा'वत से वापसी के बा'द की दुआ़

नेकी की दा'वत से वापसी पर निगरान इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर दरवाज़े के क़रीब येह दुआ़ मांगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमारी और उम्मते महबूब की मग़फ़िरत फ़रमा। ऐ मौलाए करीम ! तेरी अ़त़ा की हुई तौफ़ीक़ से हम ने **मदनी दौरा** कर के यहां के मुसलमान भाइयों को नेकी की दा'वत पेश की, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी येह ह़क़ीर कोशिश क़बूल फ़रमा। इस में हम से जो कुछ कोताहियां हुईं, वोह मुआ़फ़ फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ए'तिराफ़ करते हैं कि हम नेकी की दा'वत देने का ह़क़ अदा न कर सके। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें आइन्दा दिल जमई और इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बा अ़मल बना और हमारे जो मुसलमान भाई अच्छे अ़मल से दूर हैं, उन की इस्लाह़ के लिये हमें कुढ़ना और कोशिश करना नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

www.dawateislami.net

हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रफ़ सुन्नतों की मदनी बहार आ जाए, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमारी येह टूटी फूटी दुआ़एं क़बूल फ़रमा।[1]

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ए'लाने मग़रिब

(नमाज़े मग़रिब के) फ़राइज़ के बा'द एक इस्लामी भाई इस त़रह़ ए'लान फ़रमाए।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बक़िय्या नमाज़ के फ़ौरन बा'द اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा तशरीफ़ रखिये और ढेरों सवाब कमाइये।

दुआ़ए सानी के बा'द एक इस्लामी भाई बयान फ़रमाए (दौरानिया 25 मिनट)। मुबल्लिग़ इन चार उसूलों के मुत़ाबिक़ ही बयान फ़रमाए :

(1) अरकाने इस्लाम (2) इत्तिबाए़ सुन्नत

(3) नेकी की दा'वत (4) हुस्ने अख़्लाक़

आख़िर में मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें बयान कर के भरपूर तरग़ीब दिलाएं, तय्यार होने वालों के नाम भी लिखें, ख़ैरख़्वाह जाने वालों को नर्मी से बयान सुनने के लिये आमादा करें। बयान के बा'द इनफ़िरादी कोशिश करें (12 मिनट)।

[1].....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े, स. 325

www.dawateislami.net

मदनी दौरे के मदनी फूल

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" इस मदनी मक़्सद के तह़्त तमाम निगरान अपने ह़ल्क़ों में इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर हफ़्ते में कम अज़् कम एक दिन और अमीरे क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िलों में रोज़ाना **मदनी दौरे** की तरकीब बनाएं।

मदनी दौरे का बेहतरीन वक़्त अ़स्र ता मग़्रिब और रमज़ानुल मुबारक में नमाज़े ज़ोहर से क़ब्ल है बहर ह़ाल वोह नमाज़ मुन्तख़ब की जाए, जिस में लोग इत़्मीनान से बयान सुन सकें।

मदनी दौरे में तमाम इस्लामी भाई अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाएं। (आग़ाज़, जमाअ़ते अ़स्र से 26 मिनट क़ब्ल और इख़्तिताम, मग़्रिब के बयान के बा'द इनफ़िरादी कोशिश पर हो)

मदनी दौरे का ज़िम्मेदार इस्लामी भाई अज़ाने अ़स्र से क़ब्ल जम्अ़ होने वाले इस्लामी भाइयों में ज़िम्मेदारियां तक़्सीम करे। ज़िम्मेदारियों में अ़स्र का ए'लान, अ़स्र का बयान, अ़स्र ता मग़्रिब मस्जिद में बयान, ख़ैरख़्वाह, अ़स्र ता मग़्रिब बयान में शिर्कत करने वाले, **मदनी दौरे** में मस्जिद से बाहर जाने वाले, मग़्रिब का ए'लान, मग़्रिब का बयान और मस्जिद से बाहर जाने वालों का निगरान वग़ैरा शामिल हैं।

मदनी दौरे में कम अज़् कम 7 और ज़ियादा से ज़ियादा 12 इस्लामी भाइ हों।

www.dawateislami.net

मस्जिद में रहने वालों की ता'दाद कम अज़् कम दो और बाहर जाने वाले इस्लामी भाइयों की ता'दाद कम अज़् कम पांच हो।

हल्क़ों में **मदनी दौरे** के लिये भी दिन मुक़र्रर करें, इस का हरगिज़् नाग़ा न करें वरना दीन के काम का बहुत नुक़्सान होगा।

मदनी क़ाफ़िले "दा'वते इस्लामी" के लिये रीढ़ की हड्डी की सी हैसिय्यत रखते हैं और **मदनी दौरा** मदनी क़ाफ़िलों की मशीन है।

मदनी दौरे के ज़रीए़ मस्जिद में नमाज़ियों की ता'दाद में इज़ाफ़े के साथ साथ मदनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने में मदद मिलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

लोगों के पास जा जा कर उन को नेकी की दा'वत पेश करना हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़ीम सुन्नत है। इस अज़ीम मदनी काम की अज़ीम ज़िम्मेदारियां और उन के काम की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

निगरान का काम	आदाब बयान करना, दुआ़ कराना, (ज़रूरत पेश आने पर) आदाब याद दिलाना।
दाई का काम	नेकी की दा'वत देना।
राहनुमा का काम	मक़ामी लोगों के पास ले कर जाना, नेकी की दा'वत से क़ब्ल तआ़रुफ़ पेश करना।
ख़ैरख़्वाह का काम	लोगों को क़रीब करना, जो तय्यार हो जाए उसे मस्जिद तक अपने साथ ले कर आना।

www.dawateislami.net

ज़िम्मेदार इस्लामी भाई **मदनी दौरे** को इस त़रह़ कामयाब बनाएं कि वहां से मदनी क़ाफ़िले के लिये इस्लामी भाई तय्यार हों ।[1]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआए मदीना [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मदनी दौरा" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से मदनी मुज़ाकरों से माख़ूज़ 8 मदनी फूल

जो मेरा ज़िम्मेदार बिला उ़ज़्र **मदनी दौरे** में शिर्कत न करे तो उस का ऐसा करना ग़ैर ज़िम्मेदाराना फ़े'ल है ।[3]

दर्स देने, **मदनी दौरा** करने, सदाए मदीना लगाने, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने / पढ़ाने के लिये तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी ज़रूरी नहीं ।[4]

दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी के लिये **मदनी दौरा** बहुत मुफ़ीद मदनी काम है, तमाम इस्लामी भाई मिल कर इस मदनी काम को मज़बूत़ करें ।[5]

मदनी दौरे में सुस्ती करने वाले कितनी बड़ी सआ़दत से महरूम हो जाते हैं ।[6]

1 .....रहनुमाए जदवल, स. 142 ता 144
2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369
3 .....मदनी मुज़ाकरा, 10 रबीउ़ल अव्वल 1438 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 9 दिसम्बर 2016 ईसवी
4 .....मदनी मुज़ाकरा, 10 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 6 अगस्त 2014 ईसवी
5 .....मदनी मुज़ाकरा, ओफ़ एर 10 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 फ़रवरी 2015 ईसवी
6 .....मदनी मुज़ाकरा, 11 रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 21 जनवरी 2016 ईसवी

www.dawateislami.net

❀☞ जहां OB Van के ज़रीए हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा या हफ़्तावार इजतिमाअ़ हो, वहां मदनी इन्क़िलाब आना चाहिये । मदनी दर्स, **मदनी दौरा**, मदनी क़ाफ़िले और जैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में इज़ाफ़ा होना चाहिये ।[1]

❀☞ **मदनी दौरे** से नए नए लोग बहुत मिलते हैं, बा'ज़ हाथों हाथ, बा'ज़ मग़रिब में मस्जिद में आ जाते हैं ।[2]

❀☞ काश ! गली गली में **मदनी दौरे** की धूम पड़ जाए ।[3]

❀☞ **मदनी दौरा** मदनी क़ाफ़िले तय्यार करने की मशीन है, **मदनी दौरा** की अ़लाक़ाई सत्ह़ पर 3 रुक्नी मजलिस बनाई जाए, अराकीने मजलिस **मदनी दौरा** करने का जज़्बा रखने वाले हों ।[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से मुन्तख़ब मदनी फूल

♣ नमाज़े जुमुआ़ से पहले **मदनी दौरा** और नमाज़े जुमुआ़ के बा'द मदनी ह़ल्क़ा लगाया जाए, अगर ख़त़ीब साहिब इजाज़त दें तो जुमुआ़ के बयान की तरकीब भी बनाएं ।[5]

1 .....मदनी मुज़ाकरा, 2 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 4 सितम्बर 2016 ईसवी
2 .....मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल 1438 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 8 दिसम्बर 2016 ईसवी
3 .....मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल 1438 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 8 दिसम्बर 2016 ईसवी
4 .....मदनी मुज़ाकरा, 16 रबीउ़ल आख़िर 1438 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12 जनवरी 2017 ईसवी
5 .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 16 ता 20 रजबुल मुरज्जब 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 16 ता 20 मई 2014 ईसवी

www.dawateislami.net

♣ नए नए इस्लामी भाई मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत), मद्रसतुल मदीना बालिग़ान, हफ़्तावार इजतिमाअ़, **मदनी दौरा** वग़ैरा से मिलेंगे, इस लिये इन मदनी कामों में ज़िम्मेदारान ख़ुद बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें।[1]

♣ **मदनी दौरे** को मज़बूत करने के लिये **अ़लाक़ाई सत्ह़** पर 3 रुक्नी मजलिस बनाई जाए, जिस में त़लबा (Students), असातिज़ा (Teachers) और ऐसे अफ़राद जो शाम के औक़ात में क़दरे फ़ारिग़ होते हैं, उन को तरग़ीब दिला कर, नाम लिख कर रोज़ाना **मदनी दौरे** की तरकीब की जा सकती है मदनी क़ाफ़िला मजलिस के इस्लामी भाई येह काम ब ख़ूबी कर सकते हैं।[2]

♣ दा'वते इस्लामी के मदनी मराकिज़ को आबाद कीजिये। मदनी मराकिज़ में रोज़ाना **मदनी दौरा** की तरकीब बनाई जाए और अ़स्र ता मग़रिब होने वाले दर्स को मज़बूत किया जाए। (इस की तफ़्सील किताब "नेक बनने और बनाने के त़रीक़े" सफ़ह़ा 178 ता सफ़ह़ा 182 में मौजूद है) इस की मज़बूती के लिये ख़ैरख़्वाहों की तरकीब करें, जो फ़ैज़ाने मदीना वग़ैरा में इनफ़िरादी कोशिश कर के आ़म इस्लामी भाइयों, ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते पर आने वाले मरीज़ों और जामिअ़तुल मदीना के त़लबए किराम को इस में शिर्कत के लिये तय्यार कर के लाएं।[3]

1 .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 14 ता 17 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2014 ईसवी

2 .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 14 ता 17 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2014 ईसवी

3 .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 20 ता 21 ज़ी क़ा'दतिल ह़राम 1433 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 8 ता 9 अक्तूबर 2012 ईसवी

www.dawateislami.net

♣ दा'वते इस्लामी की किसी भी बड़ी ज़िम्मेदारी देने से क़ब्ल, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल, मदनी हुल्या, जदवल, **मदनी दौरे** में शिर्कत, जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना में दिलचस्पी के बारे में मा'लूमात ले ली जाएं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी दौरे की मदनी बहार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत को आ़म करने का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ **मदनी दौरा** भी है। अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ताकर्दा मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" का हुसूल मदनी इन्आ़मात, मदनी क़ाफ़िला और **मदनी दौरे** से मुमकिन है। अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मदनी दौरा** करते और करवाते नीज़ मदनी क़ाफ़िलों को भी ख़ुद सफ़र करवाया करते थे।[2] और **मदनी दौरा** ऐसा प्यारा मदनी काम है कि इस की बरकत से बहुत से लोग दामने इस्लाम से वाबस्ता हुवे और बेशुमार लोगों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब आया, नीज़ इस मदनी काम की भी ख़ूब मदनी बहारें हैं।

एक ईसाई का क़बूले इस्लाम

ख़ानपुर (पंजाब) के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान है कि बाबुल मदीना कराची से सुन्नतों की तरबिय्यत ह़ासिल करने के लिये

1.....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 15 ता 22 शव्वालुल मुकर्रम 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 14 ता 21 दिसम्बर 2011 ईसवी

2.....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 4 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 8 जनवरी 2011 ईसवी

www.dawateislami.net

तशरीफ़ लाए हुवे मदनी क़ाफ़िले के साथ मुझे भी **मदनी दौरा** करने का शरफ़ हासिल हुवा। एक दर्ज़ी की दुकान के बाहर लोगों को इकठ्ठा कर के हम "**नेकी की दा'वत**" दे रहे थे। जब बयान ख़त्म हुवा तो उसी दुकान के एक मुलाज़िम नौजवान ने कहा, "मैं ईसाई हूं। आप ह़ज़रात की नेकी की दा'वत ने मेरे दिल पर गहरा असर किया है। मेहरबानी फ़रमा कर मुझे इस्लाम में दाख़िल कर लीजिये।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मुसलमान हो गया।[1]

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चलने की सुन्नतें और आदाब

(1) अगर कोई रुकावट न हो तो दरमियानी रफ़्तार से रास्ते के किनारे किनारे चलें, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार महसूस हों। (2) लफ़ंगों की त़रह़ गिरेबान खोल कर अकड़ते हुवे हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुवे मा'लूम होते थे। (ابوداود، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، ص۷۲۳، حدیث: ۴۸۶۳) (3) राह चलने में परेशान नज़री से बचें और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में हिफ़्ज़त का ज़ियादा इमकान है। (सुन्नतें और आदाब, स. 97)

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 153
2.....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 180

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	♣♣♣	احیاء علوم الدین	دار الکتب العلمیة بیروت 2008ء
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ	ذم الھوی	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۰
تفسیر نعیمی	نعیمی کتب خانہ گجرات	شرح الزرقانی علی المواھب	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۷ھ
صحیح البخاری	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۸ھ	سیرت مصطفی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
صحیح مسلم	دار الکتب العلمیة بیروت 2008ء	فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
سنن ابن ماجة	دار الکتب العلمیة بیروت 2009ء	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ	رہنمائے جدول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ	نیک بننے اور بنانے کے طریقے	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ	ذوق نعت	شبیر برادرز لاھور ۱۴۲۸ھ
مرقاۃ المفاتیح	دار الکتب العلمیة بیروت 2007ء	شاہنامہ اسلام مکمل	الحمد پبلی کیشنز 2006ء
مرآۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات	وسائلِ بخشش (مرمم)	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن لاھور	فرش پر عرش	

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मुबल्लिग़ महबूब ही नहीं, महबूब गर भी होता है	15
सरकारे मदीना और नेकी की दा'वत	2	﴾2﴿ फ़रोग़े इल्म का सबब	15
बाज़ार में नेकी की दा'वत	5	﴾3﴿ मसाजिद की रौनक़ का सबब	16
नेकी की दा'वत देना सहाबा का मा'मूल था	5	﴾4﴿ नफ़्ल ए'तिकाफ़ की सआ़दत	16
नेकी की दा'वत सुन कर गाना छोड़ दिया	6	﴾5﴿ इजतिमाअ़ की बरकतें	17
सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और नेकी की दा'वत	8	﴾6﴿ इजतिमाई दुआ़ की बरकतें	19
बुज़ुर्गाने दीन और नेकी की दा'वत	8	﴾7﴿ इस्लामी भाइयों की मदनी तरबिय्यत	20
नेकी की दा'वत देने का शरई हुक्म	9	﴾8﴿ सलाम की सुन्नत को आ़म करने का ज़रीआ़	20
नेकी की दा'वत देने का फ़ाएदा	10		
"मदनी दौरा" से मुराद	11	﴾9﴿ सब्र का सवाब	21
फ़ैज़ाने मदनी दौरा के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से मदनी दौरे के ﴾13﴿ फ़ज़ाइल व फ़वाइद	13	﴾10﴿ दा'वते इस्लामी की तशहीर	22
		﴾11﴿ तकब्बुर का इलाज	23
		﴾12﴿ दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी	23
﴾1﴿ नेकी की दा'वत देने की फ़ज़ीलत पाने का ज़रीआ़	13	﴾13﴿ मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने की मशीन	24
		हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िला तय्यार	25

www.dawateislami.net

मदनी दौरे का त़रीक़ा	25	मदनी दौरे के मदनी फूल	35
ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम और काम	25	"मदनी दौरा" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से मदनी मुज़ाकरों से माख़ूज़ 8 मदनी फूल	37
त़रीक़ए कार	26		
ए'लाने अ़स्र	27		
मदनी दौरे की तरग़ीब	28	मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से मुन्तख़ब मदनी फूल	38
मदनी दौरे के आदाब	30		
नेकी की दा'वत से पहले की दुआ़	31	मदनी दौरे की मदनी बहार	40
नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)	32	एक ईसाई का क़बूले इस्लाम	40
नेकी की दा'वत से वापसी के बा'द की दुआ़	33	माख़ज़ो मराजेअ़	42
ए'लाने मग़रिब	34	फ़ेहरिस्त	43

मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तुम ज़रूर ब ज़रूर नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना वरना तुम पर ऐसा ज़ालिम हुक्मरान मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जो न तो तुम्हारे बड़ों की इ़ज़्ज़त करेगा और न ही तुम्हारे छोटों पर रह़म करेगा, तुम्हारे नेक लोग उस के ख़िलाफ़ दुआ़एं मांगेंगे लेकिन उन की दुआ़एं क़बूल न होंगी, तुम उस के ख़िलाफ़ मदद मांगोगे लेकिन तुम्हारी मदद न की जाएगी और तुम मुआ़फ़ी त़लब करोगे लेकिन तुम्हें मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी ।

(احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، الباب الاول فی وجوب...الخ، ۲/۳۸۳)

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133023

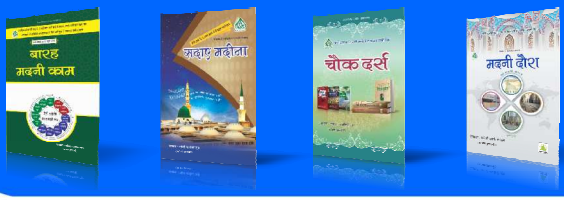

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net